एस॰एस॰जैन सुबोध पी॰जी॰ महाविद्यालयए जयपुर
संस्कृत विभाग
विषय संस्कृत
मूल्य संवर्धित पाठ्यक्रम (VAC)
भाषा विज्ञान के मूल सिद्धान्त

उद्देश्य - यह पाठ्यक्रम भाषाविज्ञान के आधारभूत मूल सिद्धान्तो का परिचय करवाता है । इससे भाषा की परिभाषा,प्रमुख तत्त्व, विशेषताएं, भाषा का साहित्य मे योगदान, उच्चारण स्थान, ध्वनियों के प्रकार आदि के माध्यम से छात्र भाषाविज्ञान की अवधारणा को समझने योग्य होगा ।

परिणाम - भाषा विज्ञान के अध्ययन से भाषा वैज्ञानिकता को समझने मे विद्यार्थी समर्थ होगें । इससे छात्र शब्द व उसके भावार्थ को जानने व विश्लेषण कर सकेंगें तथा भाषा वाक्यो, शब्दो ,वर्णो का शुद्ध उच्चारण करने मे भी समर्थ होंगें ।

शिक्षण विधि क्रमानुसार विषय व्याख्यान, उच्चारण अभ्यास, लेखन विधि, मूल्यांकन, भाषात्मक विश्लेषण, कार्यभार विधि ।

पाठ्यक्रम संरचना

इकाई प्रथम भाषा का अर्थ तथा परिभाषा, भाषा का वर्गीकरण, भाषाविज्ञान का परिचय, तथा भाषा की विशेषताएं ।

इकाई द्वितीय विभिन्न भाषा परिवारो का ज्ञान तथा भाषा विज्ञान के सिद्धान्त । ध्वनिपरिचय, प्रकार, उच्चारणस्थान, शब्दो से वर्णविन्यास तथा वाक्यनिर्माण ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र- कपिलदेव द्विवेदी
2. भाषाविज्ञान – **डॉ.** कर्णसिंह
3. भाषाविज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी
4. भाषाविज्ञान की भूमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा
5. तुलनात्मक भाषा विज्ञान के तत्व एवं संस्कृत का भाषा-शास्त्रिय अध्ययन- डॉ.निरंजनसिंह योगमणि
6. भाषा के सिद्धान्तों का विवेचन –डॉ.त्रिलोकीनाथ श्रीवास्तव ।

अध्ययन सामग्री

भाषा का अर्थ एवं परिभाषा मानव अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिस सार्थक मौखिक साधन को अपनाता है वह भाषा है। मनन चिन्तन और विचार का साधन भाषा ही वह जीवन शक्ति है, जो एक व्यक्ति को दूपरे व्यक्ति से सम्वन्ध स्थापित कराती है। प्राचीन समय में भाषा विषयक विभिन्न अंगों के अध्ययन के लिए अलग - अलग शब्द प्रचलित थे। जैसे- शिक्षा, निरुक्त, व्याकरण निर्वाचन शास्त्र, शब्दानुशासन आदि।

भाषा की परिभाषा

1. भाषा शब्द संस्कृत की भाष् धातु से बना है जिसका अर्य है बोलना।
2. प्लेटो ने सोफिस्ट विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक है बातचीत है यही ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है वह भाषा है ।.
3. स्वीट् के अनुसार। ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है।
4. वेन्द्रिए कहते हैं" भाषा एक तरह का संकेत है। जो मंत्र, कर्ण और स्पर्श द्वारा ग्रहण कियाजाता है। भाषा की दृष्टि से कर्णग्राह्य प्रतीक ही सर्वश्रेष्ठ है। भाषा वक्ता के विचार को श्रोता तक पहुंचाती है, अर्थात् वह विचार विनिमय का साधन होती है। व्यापक रूप से विचार विनिमय के तीन साधन माने जाते हैं। **1.** स्पर्श साधन **2.** दृश्यसाधन **3.** श्रवण (ध्वनि) साधन ।
5. डॉ भोलानाथ तिवारी के अनुसार- भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चारित वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते है तथा अपने विचारों को व्यक्त करते हैं भाषा में यादृच्छिक ध्वनिप्रतीक (Arbitrary vocal Symbols) होते हैं।
6. डॉ मङ्गलदेवशास्त्री - भाषा मनुष्य की चेष्टा या व्यापार को कहते हैं. जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शब्दों के द्वारा अपने विचारों को प्रकट करता है।

भाषा विज्ञान

भाषा व्यक्त वस्तु का वाहन है इमी विचार विनिमय के प्रबलतम माध्यम का वैज्ञानिक अध्ययन ही भाषाविज्ञान है। प्राप्य एवं पाश्चात्य परिवेश में विकसित होने के कारण भाषाविज्ञान को अनेक नामों से जाना जाता रहा है। प्राप्य भाषातत्वविद् इसे भाषाशास्त्र, भाषाविचार, भाषा तत्त्व एवं तुलनात्मक भाषाशास्त्र आदि नामों से पुकारते हैं। पाश्चात्य भाषा-तत्त्व विशारदों ने भाषा विज्ञान को " लिग्विस्टिक (Linguistic), साइंस ऑफ लैंग्वेजे (Science of language), फाइलोलौजी (Philology) तथा कम्पैरेटिव फाइलोलौजी (Comparative Philology) जैसे नाम दिए हैं।

संस्कृत में – "भाषायाः विज्ञानम् – भाषाविज्ञानम् – भाषा का विज्ञान भाषाविज्ञान है। विज्ञानम् – विशिष्ट ज्ञानम्-विज्ञानम् भाषा का विशिष्ट वैज्ञानिक ज्ञान भाषाविज्ञान है।

हिन्दी में – डॉ. मंगलदेवशास्त्री भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन को ही भाषा विज्ञान कहते हैं। वैज्ञानिक अध्ययन से हमारा तात्पर्य सम्यक् रूप में भाषा के बाहरी और भीतरी रूप एवं विकास आदि के अध्ययनसे है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी – भाषा के विशिष्ट ज्ञान को भाषा विज्ञान कहतें है।

डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा – "भाषाविज्ञान को भाषिकी कहते है भाषिकी में भाषण का वैज्ञानिक अध्ययन कियाजाता है।

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी – भाषा विज्ञान वह विज्ञान है, जिसमें भाषा का सर्वांगिण विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है।

पाश्चात्य मत

1. ब्रिटेन विश्वकोष – "भाषा विज्ञान में भाषाओं का अध्ययन उसकी रचना और विकास की दृष्टि से किया जाता ।
2. ग्लोसन – भाषाविज्ञान भाषा की आन्तरिक रचना के अध्ययन का शास्त्र है ।
3. आर. एच. रोविन्स- "भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन को भाषाविज्ञान कहते है।
4. प्रो- एन. पी. गुने – " भाषाका विज्ञान ही भाषाविज्ञान है।

भाषाविज्ञान का क्षेत्र

विभिन्न भाषाओं का ध्वनि, अर्थ, शब्द समुह, रूपरचना एवं वाक्य रचना की दृष्टि से किया अध्ययन भाषा विज्ञान का क्षेत्र कहा जाता है । ये हैं

1. ध्वनि विज्ञान 2. अर्थ विज्ञान 3. शब्द विज्ञान 4. रूप विज्ञान 5. वाक्य विज्ञान

1. **ध्वनि विज्ञान** – भाष् धातु से टा प्रत्यय के द्वारा भाषाशब्द स्वतः ध्वनि का सूचक है। ध्वनि भाषा की अर्थपूर्ण स्फोटात्मक न्यूनतम इकाई है ।अतः विभिन्न भाषाओं के ध्वनि प्रतीकों-स्वरों एवं व्यंजनों के उद्भव ,विकास एवं स्वरूप का का अध्ययन ध्वनि विज्ञान का आधार स्तम्भ हैं।
2. **अर्थ विज्ञान** –अर्थ को ही भाषा की **आत्मा** कहा गया है। भाषा और अर्थ अर्थात् शब्द और अर्थ एक ही है ।इसके अन्तर्गत भाषा के अर्थपक्ष का अध्ययन किया जाता है ।अर्थो में विकास एवं परिवर्तन होता रहता है ।

3. **शब्द विज्ञान**- भाषा विज्ञान में विभिन्न भाषाओं के शब्द रचना विधान एवं उनके विकास पर प्रकाश डाला गया है। शब्द रचना की शुद्धि एवं अशुद्धि व्याकरणशास्त्र का क्षेत्र है । शब्दों की रचना प्रक्रिया ,उपसर्ग, प्रत्यय एवं प्रकृति तत्व पर शब्द विज्ञान में ही स्थान मिलता है ।अतः समास ,सन्धि, शब्दभेद ,पद आदि शब्द विज्ञान की ही विश्लेषण योग्य विधियां हैं।
4. **रूप विज्ञान** - संस्कृत वैयाकरण पाणिनि ने सुबन्त और तिङन्त प्रत्ययों से युक्त शब्दों को **पद** कहा है-" सुप्तिङन्तं पदम् । संस्कृत भाषा में रूपात्मकता का प्राचुर्य है ।अव्ययों को छोडकर सभी शब्दों के रूप चलते हैं।भारोपीय परिवार की संस्कृत ,अवेस्ता ,हिन्दी , अंग्रेजी और लैटिन आदि भाषाओं में लिंगविधान, वचन , कारक, परसर्ग, काल, पुरुष, वाच्य आदि भाषा विज्ञान के रूप विज्ञान में आते हैं ।
5. **वाक्य विज्ञान** - "किसी भी पूर्ण उक्ति या उच्चारण को वाक्य कहते हैं ।आकांशा, योग्यता, एवं सन्निधि गुणों से संयुक्त पद समुह ही वाक्य होता है । वाक्य विज्ञान में वाक्य की प्रश्लिष्टात्मकता को बताया गया है । आमीणा, योग्गाला, एवं किचि गुणों से संयुक्त ५१ तुम्ही शक्य होता है - वाम्प विज्ञान में वाम्म की रिलष्क को बताया गया है।

भाषाओं का वर्गीकरण

1. **भाषा परिवार के आधार पर:**
    - आदिवासी भाषाएँ (Indigenous Languages) : ये भाषाएँ एक विशेष क्षेत्र या जनसंख्या से संबंधित होती हैं, जैसे कि हिंदी, बंगाली, तमिल, आदि।
    - अंतर्राष्ट्रीय भाषाएँ (International Languages) : ये भाषाएँ विश्व स्तर पर उपयोग की जाती हैं और कई देशों में बोली जाती हैं, जैसे अंग्रेजी, फ्रांसीसी, स्पेनिश, आदि।
2. **भाषा परिवार के आधार पर:**
    - इंडो-यूरोपीय भाषा परिवार (Indo-European Language Family) : इसमें हिंदी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, आदि भाषाएँ शामिल हैं।
    - साइन-तिब्बती भाषा परिवार (Sino-Tibetan Language Family) : इसमें चीनी, तिब्बती, बर्मीज़, आदि भाषाएँ शामिल हैं।
    - अफ्रीको-एशियाटिक भाषा परिवार (Afro-Asiatic Language Family) : इसमें अरबी, अम्हारिक, हिब्रू, आदि भाषाएँ शामिल हैं।
    - अल्ताई भाषा परिवार (Altaic Language Family) : इसमें तुर्की, मंगोलियाई, तुर्की भाषाएँ शामिल हैं।
3. **भाषा के प्रकार के आधार पर:**
    - अल्फाबेटिक भाषाएँ (Alphabetic Languages) : ऐसी भाषाएँ जिनमें वर्णमाला आधारित लेखन प्रणाली होती है, जैसे हिंदी, अंग्रेजी, आदि।

- सिलाबिक भाषाएँ (Syllabic Languages) : ऐसी भाषाएँ जिनमें प्रत्येक अक्षर या ध्वनि एक पूरा सिलाब प्रकट करता है, जैसे जापानी कैनजी।
- हिजाइरोग्लिफिक भाषाएँ (Hieroglyphic Languages) : ऐसी भाषाएँ जिनमें चित्रों या प्रतीकों के माध्यम से विचारों को व्यक्त किया जाता है, जैसे प्राचीन मिस्री।

4. **संरचनात्मक दृष्टिकोण से:**
   - आकर्षक भाषाएँ (Synthetic Languages) : भाषाएँ जिनमें शब्दों की संरचना में कई घटक शामिल होते हैं, जैसे संस्कृत, लैटिन।
   - अल्ट्रा-संरचनात्मक भाषाएँ (Analytic Languages) : भाषाएँ जिनमें शब्दों का रूप स्थिर रहता है और व्याकरण संबंधी जानकारी शब्द क्रम और अन्य संकेतों से व्यक्त की जाती है, जैसे अंग्रेजी।
5. **भाषा के उपयोग के आधार पर:**
   - सरकारी भाषाएँ (Official Languages) : वे भाषाएँ जो किसी देश या क्षेत्र की आधिकारिक भाषा होती हैं, जैसे हिंदी और अंग्रेजी भारत में।
   - सांस्कृतिक भाषाएँ (Cultural Languages) : वे भाषाएँ जो किसी विशेष संस्कृति या समुदाय के भीतर उपयोग की जाती हैं, जैसे कश्मीरी, मराठी।
   - लुप्त भाषाएँ (Endangered Languages) : वे भाषाएँ जिनका उपयोग घट रहा है और जो विलुप्त होने की कगार पर हैं, जैसे बौद्ध भाषाएँ।
6. **भाषा के बोली और रूप के आधार पर:**
   - मानक भाषा (Standard Language) : यह एक भाषा का मानक रूप होता है, जिसे औपचारिक रूप से मान्यता प्राप्त होती है, जैसे मानक हिंदी या मानक अंग्रेजी।
   - स्थानीय बोलियाँ (Dialects) : भाषा के क्षेत्रीय या सांस्कृतिक विविध रूप, जैसे पंजाबी की विभिन्न बोलियाँ।

भाषा उत्पत्ति के सिद्धांत

भाषा शब्द भाष् धातु से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ "बोलना एवं कहना" है।
भाषा विज्ञान में भाषा एवं भाषा तत्वों का ऐतिहासिक एवं तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।
भाषा उत्पत्ति के लिए दो मार्ग बताए गए हैं

1. **प्रत्यक्ष मार्ग** - इस मार्ग में भाषा की प्रारंभिक अवस्था से वर्तमान विकसित अवस्था का विचार किया जाता है।
2. **परोक्ष मार्ग** - भाषा की वर्तमान अवस्था से पीछे की ओर चलते हुए उसकी प्रारम्भिक अवस्था तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है।

भाषा की उत्पत्ति के संबंध में अनेक सिद्धांत प्रचलित है। ये निम्न प्रकार से है।

1. **दैवी सिद्धांत** - उत्पत्ति - ईश्वर से । दिव्य या प्रकृति तत्व को दैवी शक्ति कहतें हैं। वेदों में सभी तत्वों की उत्पत्ति ईश्वर से मानी गई है। चौदह माहेश्वर सूत्रों से ही वर्ण माला (अक्षर) उत्पत्ति मानी गई है। ये माहेश्वर सूत्र भगवान शिव के डमरू से उत्पन्न ध्वनि गणन बीबीसी sdfhnसे माने जाते हैं ये **चौदह माहेश्वर सूत्र** निम्न प्रकार से है 1.अइउण् 2.ऋलृक् 3.एओङ् 4.ऐऔच् 5.हयवरट् 6.लण् 7.ञमङणनम् 8.झभञ् 9.घढधष् 10.जबगडदश् 11.खफछठथचटतव् 12.कपय् 13.शषसर् 14.हल् ।
2. **संकेत सिद्धांत -** प्रवर्तक - रूसो। अन्य नाम - निर्णय सिद्धांत ।हाथ-पैर के संकेत के माध्यम से भावाभिव्यक्ति।
3. **धातु सिद्धांत -** प्रवर्तक - प्लुटो, हें, तथा मैक्समुलर अन्य नाम - अनुकरणवाद, रणमसिद्धान्त, अनुरणन सिद्धांत, डिंग डोंग सिद्धांत है। इसमें बाह्य वस्तुओं के सम्पर्क में आने पर उनसे निकलने वाली ध्वनियों के आधार पर शब्दों का निर्माण किया जा सकता है।
4. **आवेग सिद्धांत** - अन्य नाम - मूलकतावाद, मनोभावाभिव्यंजकवाद। मानवीय आवेगों के आधार पर भाषा की उत्पत्ति जैसे - ओह, हाय, छि, आ, आह आदि।
5. **या हे हो सिद्धांत -** प्रवर्तक - न्वायर ।अन्य नाम - श्रमपरिहरण सिद्धांत, संगीत सिद्धांत, श्रम ध्वनि सिद्धांत। श्रम करने पर मनुष्य के मुख से अनायास निकलने वाली ध्वनियों के आधार पर भाषा की उत्पत्ति। जैसे नाविकों की ध्वनि, वजन खिंचने, जोर लगाने, पर उत्पन्न आवाज।
6. **अनुकरनण सिद्धांत -** मनुष्य समाज में अनुकरण या नकल करने की प्रवृति है। इसे ध्वनि अनुकरण सिद्धांत, भोंभों सिद्धांत भी कहते हैं। बच्चे अनुकरण से ही सिखतें है यह तीन प्रकार का होता है। 1.ध्वन्यात्मक अनुकरण 2.अनुरणनात्मक अनुकरण सिद्धांत 3.दृश्यात्मक अनुकरण सिद्धांत ।
7. **इंगित सिद्धांत -** प्रवर्तक पालिनेशियन भाषा विद्डॉ राये, डरविन, रिचर्ड, माने गए हैं।
8. **सम्पर्क सिद्धांत** - इसके प्रवर्तक मनोवैज्ञानिक रेवज है। इस सिद्धांत का अर्थ 'सामाजिक जीवों में आपसी सम्पर्क रखने की सहज प्रवृत्ति ' है।

भाषा की प्रकृति एवं कार्य

1. भाषा एक अर्जित संपत्ति है।
2. भाषा परिवर्तनशील है।
3. भाषा योगात्मकता से अयोगात्मकता की ओर चलती है।
4. भाषा सामाजिक सम्पत्ति है।
5. भाषा स्थूलता से सूक्ष्मता की ओर चलती है।

भाषा की विशेषताएं

क. भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है।यह अर्जित सम्पदा है।
ख. भाषा सामाजिक वस्तु है यह व्यक्तिक सृष्टि नहीं है।
ग. भाषा अनुकरण द्वारा अर्जित की जाती है यह परम्परागत चलता रहता है।
घ. भाषा सतत परिवर्तनशील है। भाषा का कोई अन्तिम रुप नहीं होता ।
ङ. भाषा की भौगोलिक व ऐतिहासिक सीमा होती है।
च. भाषा का एक आदर्श मानक(standed) रुप होता है।
छ. भाषा की परिवर्तनशीलता उसका मूल स्वभाव है।
ज. भाषा कठिनता से सरलता ,स्थूलत् से सूक्ष्मता, संयोगावस्था से वियोगावस्था की ओर अग्रसर होती है।

भाषा का वर्गीकरण के विभिन्न आधार

क. महाद्वीप के आधार पर–जैसे एशिया, अफ्रीका, यूरोप महाद्वीप की भाषाएं इत्यादि ।
ख. देश के आधार पर – जैसे भारतीय, चीनी, बर्मी, जापानी भाषाए इत्यादि ।
ग. धर्म के आधार पर – जैसे ईसाई, हिन्दू, मुस्लिम आदि की भाषाए
घ. काल या समय के आधार पर – प्रागैतिहासिक, मध्यकालीन,वैदिक कालीन, आधुनिक भाषा आदि ।
ङ. आकृति के आधार पर–अयोगात्मक तथा योगात्मक भाषाए ।
च. परिवार के आधार पर–भारोपीय परिवार, एकाक्षर परिवार,द्रविढ परिवार की भाषाए ।

आकृतिमूलक वर्गीकरण

1. **अयोगात्मक** – चीनी भाषा
2. **योगात्मक** 1.प्रश्लिश्ट योगात्मक– पूर्ण(ग्रीनलैण्ड की भाषा), आंशिक(बास्क भाषा)

   2.अश्लिष्ट योगात्मक–पूर्वयोगात्मक(काफिरी), मध्य.यो.(संथाली), अन्तयो.(तुर्की), पूर्वान्तयो.(मफौर)
3. **श्लिष्ट योगात्मक** 1.अन्तर्मुखी – संयोगात्मक(अरबी) , वियोगात्मक(हिब्रू)

   2.बहिर्मुखी –संयोगात्मक(संस्कृत) , वियोगात्मक(हिन्दी)

पारिवारिक वर्गीकरण

संस्कृत	फारसी	ग्रीक	लैटिन	जर्मन	अंग्रेजी	फ्रैंच

पितृ	पिदर	Pater	Pater	Vater	Fater	Pere
भ्रातृ	विरादर	Frater	Frater	Braider	Brother	-
अश्व	अस्प	Hippos	Fquus	Aihve	Horse	-
त्रि	सिंह	Tries	Tres	Dres	Three	Tri
सप्त	हप्त	Hepta	Septem	Sieben	Seven	-

विभिन्न भाषा परिवारों का ज्ञान

विश्व की भाषाओं को चार खण्डों में विभाजित किया गया हैं।

1. अफ्रीका खण्ड 2.अमरीका खण्ड

3.प्रशान्त महासागर खण्ड 4.यूरेशिया खण्ड

अफ्रीका खण्ड मे मुख्य रुप से 5 भाषा परिवार है– बुशमैन परिवार, बान्टू परिवार, सूडान परिवार, हेमेटिक या हामी परिवार, सेमेटिक या सामी परिवार

अमेरीका खण्ड में उत्तरी अमरीका, मध्य अमरीका अपगर्हित, दक्षिणी अमरीका भाषा परिवार हैं।

प्रशान्तमहासागरीय खण्ड मे इण्डोनेशियाईपरिवार, मलेनेशियाई परिवार,पालीनेशियाई,पापुआई, आस्ट्रेलियाई परिवार हैं।

यूरेशिया खण्ड में सेमेटिक , काकेशस, यूराल अल्टाई, चीनी(एकाक्षर), द्रविड, आस्ट्रेलियाई (आग्नेय), भारोपीय परिवार आते हैं।

भारोपीय परिवार संसार के समस्त भाषा परिवारों में सर्वाथिक महत्तवपूर्ण परिवार माना जाता है। यह यूरेशिया खण्ड का प्रमुखतम भाषा परिवार है। भारत से लेकर पूरे यूरोप तक बोली जाने के कारण इस परिवार की भाषाओं को भरोपीयभाषाएं कहतें हैं।यह परिवार एशिया मेंभारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका, अफगानिस्तान, ईरान एवं यूरोप में रूस, रुमानिया, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन, इंग्लैंड, जर्मनी तथाविश्व के अनेक भागों तक फैला है।इसकी प्रमुख भाषाएं संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन फ्रांसीसी, अवेस्ता ,ग्रीक,लैटिन आदि प्राचीन भाषाएं हैं।

अंग्रेजी, रुसी, जर्मन, स्पेनी, फ्रांसीसी, पुर्तगाली, इतालवी, फारसी, हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी आधुनिक भाषाएं हैं।

भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के **प्राचीन संस्कृत विद्वानों में महर्षि पतंजलि, महर्षि यास्क,पाणिनी,भर्तृहरि** है।यह परिवार मुख्यतः दो वर्गो में विभक्त है- **केन्तुम् वर्ग, सतम् वर्ग** ।

केन्तुम् एवं सतम् वर्ग दोनों ही शब्दों का अर्थ है- सौ । मूल भारोपीय भाषा की कण्ठ्य (कवर्ग,ह) का परिवर्तन ऊष्म ध्वनियों(स,श,ष,ह)में होता है।

ध्वनि-परिवर्तन की दिशा में इसे ऊष्मीकरण कहतें है। इसे केन्तुम् एवं सतम् नाम देने का श्रेय **वान ब्रेडले** नामक विद्वान को दिया जाता है।ब्रेडले ने इसका विश्लेषण निम्न प्रकार से किया है।

सतम वर्ग	केन्तुम वर्ग
अवेस्ता-सतम्	लैटिन-केन्टुम्
फारसी-सद	ग्रीक-हेक्टोन
संस्कृत-शतम्	इटैलियन-केन्टो
हिन्दी-सौ	अंग्रेजी-हन्ड्रेड

केन्तुम् वर्ग कि भाषाओं में कुछ यूरोपीय भाषाओं को स्थान दिया जाताहै ।.भाषा वैज्ञानिक स्तर पर इनका वर्गीकरण इस प्रकार है-

1. केल्टिक - इस वर्ग की भाषाओं में आयरिश और वेल्श भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है .
2. ट्यूटानिक - इस वर्ग की प्रधान भाषाएं जर्मन एवं अंग्रेजी है ।
3. लैटिन - लैटिन केन्तुम वर्ग की प्राचीन भाषा है ।
4. हेलेनिक- यह प्रधान भाषा वर्ग है. इसमें ग्रीकभाषा प्रमुख है।
5. तोखारी- यह सबसे कम प्रसिद्ध भाषा है।

सतम वर्ग में इलिरियन, वाल्टिक, स्लोवोनिक, आर्मेनियन, आर्य या हिन्दी ईरानी शाखा है ।

ध्वनि परिचय (Phonetics and Phonology)

भाषा विज्ञान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो ध्वनियों के अध्ययन से संबंधित है। इसे दो मुख्य शाखाओं में बाँटा जा सकता है: ध्वनिविज्ञान (Phonetics) और ध्वनिशास्त्र (Phonology)।

ध्वनि परिचय:

1. **ध्वनिविज्ञान (Phonetics):**

ध्वनिविज्ञान का उद्देश्य भाषाओं में ध्वनियों के भौतिक गुणों और उनके निर्माण की प्रक्रिया को समझना है। इसे तीन मुख्य शाखाओं में विभाजित किया जाता है:

- आवाजविज्ञान (Articulatory Phonetics): परिभाषा: आवाजविज्ञान में यह अध्ययन किया जाता है कि ध्वनियाँ किस प्रकार से मुँह, गला, और स्वरयंत्र (लैरीन्क्स) द्वारा बनाई जाती हैं। ध्वनि निर्माण: इसमें स्वर और व्यंजन ध्वनियों का

निर्माण किस प्रकार होता है, जैसे कि स्वर (vowels) और व्यंजन (consonants) की उत्पत्ति की प्रक्रिया।

- स्वरविज्ञान (Acoustic Phonetics): परिभाषा: स्वरविज्ञान में ध्वनियों के भौतिक गुण, जैसे कि आवृत्ति (frequency), आयाम (amplitude), और ध्वनि तरंगों की विशेषताएँ, का अध्ययन किया जाता है। ध्वनि तरंग: इसमें ध्वनियों की तरंगों की संरचना और उनके गुणधर्मों को समझा जाता है।

- स्वीकृति विज्ञान (Auditory Phonetics): परिभाषा: स्वीकृति विज्ञान में यह अध्ययन किया जाता है कि मानव कान और मस्तिष्क ध्वनियों को कैसे सुनते हैं और उनका प्रसंस्करण कैसे होता है। ध्वनि ग्रहण: इसमें ध्वनियों के श्रवण और उनकी पहचान की प्रक्रिया की जांच की जाती है।

2. **ध्वनिशास्त्र (Phonology):**

ध्वनिशास्त्र का उद्देश्य यह समझना है कि भाषाओं में ध्वनियाँ किस प्रकार से मानसिक संरचनाओं में व्यवस्थित होती हैं और उनका प्रयोग किस प्रकार किया जाता है।

- ध्वनियों की प्रणाली (Phoneme System): परिभाषा: यह अध्ययन करता है कि भाषाओं में ध्वनियों की प्रणाली कैसी होती है और कैसे ध्वनियाँ मानसिक रूप से वर्गीकृत होती हैं। ध्वनि संवेदीकरण: जैसे कि अंग्रेजी में /p/ और /b/ भिन्न-भिन्न ध्वनि रूप हैं जो अर्थ परिवर्तन के लिए जिम्मेदार हैं।

- ध्वनियोजन (Phonotactics): परिभाषा: ध्वनियोजन में यह अध्ययन किया जाता है कि एक भाषा में ध्वनियों का संयोजन और क्रम कैसा होता है। ध्वनि संयोजन: इसमें यह देखा जाता है कि ध्वनियाँ किस क्रम में आ सकती हैं और किस प्रकार से संयोजित होती हैं।

- ध्वनि परिवर्तन (Sound Change): परिभाषा: यह अध्ययन करता है कि ध्वनियाँ समय के साथ कैसे बदलती हैं और इन परिवर्तनों के पैटर्न क्या होते हैं। ध्वनि परिवर्तन: जैसे कि प्राचीन भाषाओं में ध्वनियों का स्वरूप बदलना और आधुनिक भाषाओं में उनके प्रभाव।

- ध्वनि तात्त्विकता (Distinctive Features): परिभाषा: ध्वनि तात्त्विकता में यह अध्ययन किया जाता है कि ध्वनियों की कौन-कौन सी विशेषताएँ उनके अर्थ को बदलती हैं। विशेषताएँ: जैसे कि स्वर और व्यंजन की विशिष्ट विशेषताएँ, जो उनके मानसिक प्रतिनिधित्व को प्रभावित करती हैं।

ध्वनि के प्रमुख तत्व:

- **स्वर (Vowels):** ये ध्वनियाँ जो वाक्य में बिना किसी बाधा के उत्पन्न होती हैं, जैसे 'अ', 'आ', 'इ', 'उ', आदि।

- **व्यंजन (Consonants):** ये ध्वनियाँ जो मुँह के विभिन्न हिस्सों से संपर्क करके उत्पन्न होती हैं, जैसे 'क', 'ग', 'न', 'स', आदि।

- **उदात्त ध्वनियाँ (Suprasegmental Features):** ये उच्चारण की विशेषताएँ हैं जैसे स्वरावली (intonation), तनाव (stress), और स्वरचिह्न (tone)।

ध्वनि विज्ञान का अध्ययन भाषा के बुनियादी तत्वों को समझने में मदद करता है और यह भाषा के विभिन्न प्रयोगों और विकास की प्रक्रिया को समझने में सहायक होता है।

भाषा विज्ञान में "प्रकार" शब्द विभिन्न संदर्भों में उपयोग हो सकता है, जैसे ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों, और भाषाओं के वर्गीकरण में। यहाँ विभिन्न प्रकारों का विस्तृत विवरण दिया गया है:

1. ध्वनियों के प्रकार:

- **स्वर (Vowels):** परिभाषा: वे ध्वनियाँ जिनका निर्माण वायुमंडल के अवरोध के बिना होता है। ये ध्वनियाँ उच्चारण के दौरान मुँह के विभिन्न भागों में किसी भी बाधा के बिना निकलती हैं। प्रकार: स्वर निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित होते हैं: उच्चारण की स्थिति: अग्रस्वर (front vowels), मध्यस्वर (central vowels), पिछस्वर (back vowels)। उच्चारण की ऊँचाई: उच्च स्वर (high vowels), मध्य स्वर (mid vowels), नीच स्वर (low vowels)। राउंडिंग: राउंडेड (rounded), अनराउंडेड (unrounded)।

- **व्यंजन (Consonants):** परिभाषा: वे ध्वनियाँ जिनका निर्माण वायुमंडल में किसी न किसी प्रकार की बाधा या रुकावट के साथ होता है। प्रकार: व्यंजन विभिन्न गुणधर्मों के आधार पर वर्गीकृत किए जाते हैं: उत्पत्ति स्थान (Place of Articulation): पत्तीय (bilabial), दंत (dental), ठोड़ (alveolar), पॅलाटल (palatal), वलर (velar)। उत्पत्ति विधि (Manner of Articulation): विसर्ग (plosive), फ्रिकेटिव (fricative), नासिक (nasal), लिक्विड (liquid), आपस में मिलकर (affricate)। ध्वनि स्थिति: स्वरसंगत (voiced), स्वरहीन (voiceless)।

2. शब्दों के प्रकार:

- साधारण शब्द (Simple Words): वे शब्द जिनमें एक ही मूल धातु होता है, जैसे 'पानी', 'सूरज'।

- संयुक्त शब्द (Compound Words): वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मिलन से बनते हैं, जैसे 'साल के पेड़' (साल + पेड़), 'गृहपाठ' (गृह + पाठ)।

- व्युत्पन्न शब्द (Derived Words): वे शब्द जो किसी मूल शब्द से उपसर्ग या प्रत्यय जोड़कर बनते हैं, जैसे 'अध्यापक' (अध्यक्ष + क), 'सुंदरता' (सुंदर + ता)।

3. वाक्यों के प्रकार:

- सरल वाक्य (Simple Sentences): एक वाक्य जिसमें एक ही मुख्य विचार या विचारधारा होती है, जैसे 'मैं स्कूल जा रहा हूँ।'

- संयुक्त वाक्य (Compound Sentences): दो या दो से अधिक सरल वाक्यों का संयोजन, जो समन्वयक शब्दों से जुड़े होते हैं, जैसे 'मैं स्कूल जाता हूँ और मेरे दोस्त भी आते हैं।'

- पर्यायी वाक्य (Complex Sentences): एक मुख्य वाक्य और एक या अधिक उपवाक्यों का संयोजन, जैसे 'जब मैं स्कूल जाता हूँ, तो मेरे दोस्त भी मेरे साथ होते हैं।'

4. भाषाओं के प्रकार:

- प्राकृतिक भाषाएँ (Natural Languages): वे भाषाएँ जो स्वाभाविक रूप से मानव समाज में उत्पन्न और विकसित होती हैं, जैसे हिंदी, अंग्रेजी, स्पेनिश।

- निर्मित भाषाएँ (Constructed Languages): वे भाषाएँ जिन्हें विशेष उद्देश्यों के लिए मानवों द्वारा डिज़ाइन किया गया है, जैसे एल्विश (Elvish) या क्लिंगन (Klingon)।

- प्राचीन भाषाएँ (Ancient Languages): वे भाषाएँ जो ऐतिहासिक काल में प्रचलित थीं और अब उपयोग में नहीं हैं, जैसे संस्कृत, लैटिन।

- सजीव भाषाएँ (Living Languages): वे भाषाएँ जो वर्तमान में प्रचलित और प्रयोग में हैं, जैसे हिंदी, मंदारिन।

5. भाषा विज्ञान के दृष्टिकोण:

- वर्णात्मक दृष्टिकोण (Descriptive Approach): यह भाषा के मौजूदा उपयोग और वास्तविक रूप का वर्णन करता है, बिना किसी मानक के निर्धारण के।

- वैयक्तिक दृष्टिकोण (Prescriptive Approach): यह भाषा के सही उपयोग के नियम और मानक स्थापित करता है, जैसे ग्रामर और वर्तनी नियम।

ये विभिन्न प्रकार भाषा के अध्ययन और विश्लेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और हमें भाषा की संरचना, उपयोग और विकास को समझने में मदद करते हैं।

ध्वनि विज्ञान में, उच्चारण स्थान (Place of Articulation) वह स्थान होता है जहां वायुपथ में ध्वनि के निर्माण के लिए अवरोध उत्पन्न होता है। यह ध्वनियों के वर्गीकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू है, विशेष रूप से व्यंजन ध्वनियों के संदर्भ में। उच्चारण स्थान यह निर्धारित करता है कि ध्वनि के उत्पादन के दौरान वायुमंडल में किस प्रकार का अवरोध उत्पन्न होता है।

ध्वनियों का वर्गीकरण

ध्वनियों का किसी भी भाषा में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। ध्वनि के आवश्यक उपकरण उच्चारण अवयव ही माने जाते हैं। इन ध्वनियों को प्राचीन वैयाकरणों ने स्वर एवं व्यंजन के रुप में विभक्त किया है - 'स्वयं राजन्ते इति स्वरा:' 'अनवग भवन्ति व्यञ्जनानि'।

स्वर - स्वत: उच्चारित होने वाले वर्णो को स्वर कहतें हैं।

व्यञ्जन - स्वर की सहायता से उच्चारित होने वाले वर्णो को व्यञ्जन कहते हैं।

पाणिनि ने समस्त ध्वनि समूह को 14 माहेश्वर सूत्रों में पिरोया है।

1.अइउण् 2.ऋलृक् 3.एओङ् 4.ऐऔच् 5.हयवरट् 6.लण् 7.ञमङणनम् 8.झभञ् 9.घढधष् 10.जबगडदश् 11.खफछठथचटतव् 12.कपय् 13.शषसर् 14.हल् ।

स्वर एवं व्यंजन का परिचय

हिन्दी भाषा में **स्वर** - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अ:।

व्यञ्जन - क, ख, ग, घ, ङ,

च, छ, ज, झ, ञ,

ट, ठ, ड, ढ, ण,

त, थ, द, ध, न,

प, फ, ब, भ, म

य, व, र, ल,

श, स, ष, ह

क्ष, त्र, ज्ञ

संस्कृत भाषा में स्वर - अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ।

1. ह्रस्व स्वर-अ, इ, उ, ऋ, ऌ
2. दीर्घ स्वर-आ, ई, ऊ, ॠ
3. मिश्रित स्वर-ए, ओ, ऐ, औ

व्यञ्जन वर्ण-

1. स्पर्श वर्ण - क-म तक के 25 वर्ण।

कवर्ग - क्, ख्, ग, घ, ङ्

चवर्ग - च्, छ्, ज्, झ्, ञ्

टवर्ग - ट् , ठ्, ड्, ढ्, ण्

तवर्ग - त्, थ्, द्, ध्, न्

पवर्ग - प्, फ्, ब्, भ्, म्

2. अन्त:स्थ वर्ण - य्, व्, र्, ल्.
3. ऊष्म वर्ण - श्, ष्, स्, ह्
4. विसर्ग (:)

उच्चारण स्थान

1.कण्ठ - अकुहविसर्जनीयानाम् कण्ठ:।

अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह, (:) विसर्ग इनका उच्चारण कण्ठ से होता है इन्हें कण्ठ्य वर्ण कहते हैं।

2.तालु - इचुयशानाम् तालु।

इ, ई, ॐ, छ, ज, झ, ञ, य, श इनका उच्चारण तालु से होता है। इन्हें तालव्य वर्ण कहतें है।

3.मूर्धा - ऋटुरषाणाम् मूर्धा ।

ऋ. ट ठ, ड, ढ, ण, र, ष ।इनका उच्चारण मूर्धा से होता है। इन्हे मूर्धन्य वर्ण कहते हैं।

4.दन्त - लृतुलसानां दन्ता ।

लृ, त, थ, द, ध, न, ल, स इनका उच्चारण दन्त से होता है। इन्हे दन्त्य वर्ण कहते हैं।

5.ओष्ठ - ऊपूपध्मानीयानाम् ओष्ठौ।

उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म,ॅ प, ॅफ इनका उच्चारण ओष्ठ से होता है। इन्हें मूर्धन्य वर्ण कहते हैं।

6. नासिका - ञमङणनानाम् नासिका च।

ञ, म, ङ, ण, न और (ँ) अनुस्वार का उच्चारण नासिका से होता है। इन्हें नासिक्य वर्ण कहतें है ।

7. कण्ठ- तालु - एदैतोः कण्ठतालु।

ए, ऐ इनका उच्चारण कण्ठतालु से होता है। इन्हें कण्ठतालव्य वर्ण कहतें हैं ।

8. कण्ठोष्ठ - औदौतोः कण्ठोष्ठम् ।

ओ, औ का उच्चारण कण्ठ तथा ओष्ठ से होता है। इन्हे कण्ठोष्ठ्य वर्ण कहतें हैं ।

9.दन्तोष्ठ- वकारस्य दन्तोष्ठ्यम् ।

व वर्ण का उच्चारण दन्त एवं ओष्ठ से होता है। इसे दन्तोष्ठ्य वर्ण कहते है।

10. जिह्वामूलीय - जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम् ।

ॅक, ॅख वर्ण जिह्वामूलीय वर्ण है।

प्रयत्न

प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं।

1. 1.आभ्यन्तर प्रयत्न
2. 2.बाह्य प्रयत्न

आभ्यंतर प्रयत्न पाँच प्रकार का होता है। स्पृष्ट :- क से म तक के 25 स्पर्श व्यञ्जन वर्ण स्पृष्ट कहलाते है।

क. **ईषत्स्पृष्ट** :- य, व, र, ल ये अन्त:स्थ वर्ण ईषत्स्पृष्ट वर्ण कहलाते हैं।
ख. **ईषत् विवृत** :- श, ष, स, ह ये ऊष्म वर्ण ईषत् विवृत कहलाते हैं।
ग. **विवृत** : अ, इ, उ, ऋ, लृ, ऐ, ओ, ऐ, औ ये स्वर वर्ण विवृत कहलाते हैं।
घ. **संवृत** : - ह्रस्व अ वर्ण संवृत होता है।

बाह्य प्रयत्न 11 प्रकार के होते हैं।

1. विवार
2. संवार
3. श्वास
4. नाद
5. घोष
6. अघोष
7. अल्प प्राण
8. महाप्राण
9. उदात्त
10. अनुदात्त
11. स्वरित ।

विवार, श्वास, अघोष प्रयत्न - क, ख, च , छ, ष, ठ, त, थ, प, फ, श, स, ष वर्ण होते हैं।

संवार, नाद, घोष प्रयत्न - ग, घ, ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म, ह, य, व, र, ल वर्ण होते हैं।

अल्पप्राण - क, ग, ङ, च, ज, ञ, ष, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, व, र, ल अल्पप्राण वर्ण हैं।

महाप्राण - ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ, श, स, ष ये महाप्राण वर्ण हैं।

उदात्त - मुख के ऊपरी हिस्से से जिनका उच्चारण होता है वे उदात्त वर्ण कहलाते हैं।

अनुदात्त – मुख के निचले हिस्से से जिनका उच्चारण होता है वे अनुदात्त वर्ण कहलाते हैं।

स्वरित – उदात्त व अनुदात्त दोनों तरह से उच्चारित वर्ण स्वरित कहलाते हैं।

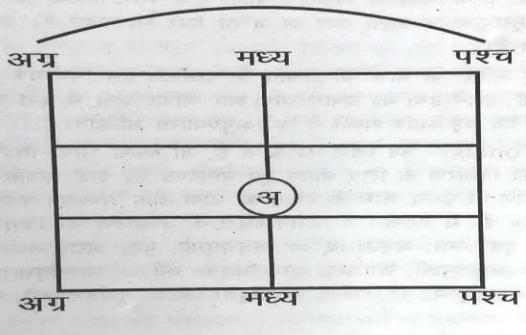

ध्वनि समूह

वैदिक ध्वनि वमूह	संस्कृत ध्वनि समूह	हिन्दी ध्वनि समूह
स्वर :	**स्वरः**	**स्वरः**
★ **स्वर**- अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ओ= 11	★ **मूल स्वर**- अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ ए ओ=11	★ **मूल स्वर**- अ आ इ ई उ ऊ ए ओ = 8
★ **संयुक्त स्वर**- अ इ (ए) अउ (ओ) = 2	★ **संयुक्त स्वर**- अ इ (ए) अउ (ओ) = 2	★ **संयुक्त स्वर**- अ इ (ऐ) अ उ (औ)= 2
व्यंजन :	**व्यंजन :**	**व्यंजन :**
★ **स्पर्श**- क् ख् ग् घ् ङ् (कण्ठ्य)	★ **स्पर्श**- क् ख् ग् घ् ङ् (कण्ठ्य)	★ **स्पर्श**- क् (क़) ख् ग् घ्
प् छ् ज् झ् ञ् (तालव्य)	प् छ् ज् झ् ञ् (तालव्य)	ट् ठ् ड् ढ्
ट् ठ् ड् (ळ) ढ् (व्ह) ण् (मूर्धन्य)	ट् ठ् ड् (ळ) ढ् (व्ह) ण् (मूर्धन्य)	त् थ् द् ध्
त् थ् द् ध् न् (दन्त्य)	त् थ् द् ध् न् (दन्त्य)	प् फ् ब् भ् = 17
प् फ् ब् भ् म् (ओष्ठ्य) = 27	प् फ् ब् भ् म् (ओष्ठ्य) = 25	★ **संघर्षी**- श् स् ह् ख़् ग़् ज़् फ़् ब् = 8
★ **अन्तःस्थ**- य् (इ) र् ल् व् (उ) = 4	★ **अन्तःस्थ**- य् (इ), र्, ल्, व् (उ) = 4	★ **स्पर्शसंघर्षी**- च् छ् ज् झ् = 4
★ **अघोष संघर्षी**- श् ष् स्= 3	★ **अघोष संघर्षी**- श् ष् स्= 3	★ **अनुनासिक**- ञ्, म्, ङ्, ण् न् न्ह् म्ह्= 7
★ **घोष उष्म**- ह् = 1	★ **घोष उष्म**- ह् = 1	★ **पार्श्विक**- ल् (ल्ह्) = 2
★ **अघोष उष्म**- :(विसर्ग) ≍ जिह्वामूलीय ≍ उपध्मा॰= 3	★ **अघोष उष्म**- :(विसर्ग)= 1	★ **लुण्ठित**- र् (रह) = 2
★ **शुद्ध अनुनासिक**- ं (अनुस्वार) = 1	★ **शुद्ध अनुनासिक**- ं (अनुस्वार) = 1	★ **उत्क्षिप्त**- ड़् ढ़् = 2
		★ **अर्द्धस्वर या अन्तःस्थ**- य् व् = 2

संस्कृत विभाग

मूल्य संवर्धित पाठ्यक्रम

भाषा विज्ञान के मूल सिद्धांत (VAC 09)

सत्र - 2023 - 24

Assignment

1. भाषा शब्द का अर्थ एवं विशेषताएं लिखिए।
2. भाषा विज्ञान के प्रमुख सिद्धांतों का वर्णन किजिए।